## 2.1. शुंगवंश *(The Sungas)*

मौर्यों के पतन के पश्चात मगध की सत्ता शुंगों के हाथों में आई। शुंग-राज्य का संस्थापक पुष्यमित्र शुंग था। 187 ई॰ पू॰ में उसने अंतिम मौर्य-शासक बृहद्रथ की हत्या एक सैनिक निरीक्षण के दौरान करके मौर्यवंश के शासन को समाप्त कर दिया और स्वयं एक नए राजवंश की नींव डाली। साहित्यिक एवं पुरातात्त्विक स्रोतों से शुंगों के इतिहास के विषय में जानकारी मिलती है। साहित्यिक स्रोतों में प्रमुख हैं पतंजलि का **महाभाष्य, पुराण,** कालिदास का **मालविकाग्निमित्रम्,** वाणभट्ट का **हर्षचरित,** जैन लेखक मेरुतुंग की **थेरावली,** बौद्धमहायान ग्रंथ **दिव्यावदान,** तारानाथ लिखित **बौद्धधर्म का इतिहास** इत्यादि। अभिलेखीय साक्ष्यों में खारवेल के हाथीगुम्फा-अभिलेख एवं धनदेव के अयोध्या-अभिलेख का उल्लेख किया जा सकता है। भरहुत तथा साँची के स्तूपों से इस समय की कलात्मक प्रगति के विषय में जानकारी मिलती है।

## 2.1(a). शुंगों की उत्पत्ति *(The Origin of the Sungas)*

शुंग किस वंश से संबद्ध थे, यह निश्चित करना एक दुष्कर कार्य है। **दिव्यावदान** नामक बौद्ध महायान-ग्रंथ में बताया गया है कि पुष्यमित्र ने यद्यपि मौर्य साम्राज्य को नष्ट किया, तथापि वह स्वयं भी मौर्यवंशी था। यह बात बहुत तर्कसंगत प्रतीत नहीं होती; क्योंकि यदि वह मौर्यवंश का ही होता, तो उसे साम्राज्य का विनाशक नहीं कहा जाता। कुछ विद्वानों की धारणा है कि शुंग या तो ईरानी थे, या उनका संबंध ईरान के साथ था। ऐसा इस आधार पर माना जाता है कि शुंगवंशीय शासकों के नामों में 'मित्र' और ईरान में प्रचलित 'मित्र' (सूर्य) की पूजा में संबंध था। इस तर्क में भी दम नहीं है। इतिहासकार काशी प्रसाद जायसवाल के विचारानुसार पुष्यमित्र मौर्यवंश के राजपुरोहित का पुत्र था। अशोक की धार्मिक नीति से क्षुब्ध होकर राजपुरोहित एवं उनके वंशज धार्मिक क्रियाकलाप से अलग हो गए एवं सेना में नौकरी कर ली। इसी क्रम में पुष्यमित्र भी सेनापति बन गया। अतः, शुंग ब्राह्मण थे। जायसवाल की यह दलील सही हो या नहीं, परंतु अन्य उपलब्ध प्रमाण भी शुंगों को ब्राह्मण ही बताते हैं। पाणिनि उन्हें भारद्वाजगोत्रीय ब्राह्मण बताता है। कालिदास ने **मालविकाग्निमित्रम्** में पुष्यमित्र के

पुत्र अग्निमित्र को बैंबिकवंशीय और काश्यप गोत्र से संबद्ध माना है। तिब्बती इतिहासकार लामा तारानाथ भी शुंगों को ब्राह्मण मानता है तथा पुष्यमित्र को 'ब्राह्मण राजा' कहता है। इसके अतिरिक्त, शुंगों की वैदिक धर्म के प्रति अनुरक्ति एवं बौद्धों की शुंगों के प्रति विरक्ति देखकर भी यह अंदाज लगाया जा सकता है कि शुंग ब्राह्मण ही थे, जिन्होंने बौद्धधर्म के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए वैदिक या ब्राह्मणधर्म का पुनरुत्थान किया।

## 2.2. पुष्यमित्र शुंग *(Pushyamitra Sunga : 187-151 B.C.)*

प्राचीन भारतीय शासकों में पुष्यमित्र शुंग एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उसने उत्तर-मौर्यकालीन शासकों के समय में गिरती हुई राजसत्ता के गौरव को पुनःस्थापित करने का प्रयास किया। अपनी सेना और बुद्धि के बल पर उसने पुनः राजनीतिक एकता स्थापित करने का प्रयास किया तथा यवन-आक्रमणकारियों को आगे बढ़ने से रोका। पुष्यमित्र के आरंभिक जीवन के विषय में बहुत अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। वह अंतिम मौर्य शासक बृहद्रथ का सेनापति था। प्रो० बी० पी० सिन्हा के अनुसार शासक बनने के पूर्व सेनापति के रूप में पुष्यमित्र ने यवनों से संघर्ष किया था। संभवतः 189-88 ई० पू० में दमित्र प्रथम ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया था। यह आक्रमण अल्पकालिक था। दमित्र को शीघ्र ही 187 ई० पू० में पाटलिपुत्र से लौटना पड़ा। उसके जाने के बाद पुष्यमित्र ने मौर्य सत्ता समाप्त कर 187 ई० पू० में शुंग वंश की सत्ता स्थापित की।[1]

**राजनीतिक एकीकरण की प्रक्रिया**—मौर्यसत्ता हथियाने के पश्चात् पुष्यमित्र ने—जो 'सेनापति' (अयोध्या-अभिलेख में) के नाम से भी विख्यात था—मौर्य साम्राज्य के बिखराव को रोकने का प्रयास किया। सत्ता के हस्तांतरण एवं केंद्रीय शक्ति के कमजोर पड़ जाने के कारण साम्राज्य के विभिन्न भाग स्वतंत्र हो रहे थे। अतः, नए शासक के समक्ष सबसे बड़ी समस्या यह थी कि किस प्रकार वह साम्राज्य के विभिन्न भागों पर अपना नियंत्रण स्थापित करे। साम्राज्य की राजधानी पाटलिपुत्र पर अधिकार कायम करते ही वह इस दिशा में प्रयत्नशील हो गया। कोशल, वत्स और अवन्ति पर पुनः उसने अपनी पकड़ मजबूत की। अवन्ति-राज्य में स्थित विदिशा नगर (पूर्वी मालवा, मध्यप्रदेश में बेसनगर) में साम्राज्य की दूसरी राजधानी स्थापित की गई, जिससे कि दूरस्थ प्रदेशों पर सुगमतापूर्वक नियंत्रण रखा जा सके। विदिशा में अग्निमित्र को उपराजा के रूप में नियुक्त किया गया। अयोध्या-अभिलेख से विदित होता है कि राजा का एक प्रतिनिधि कोशल में भी नियुक्त किया गया। संभवतः, नर्मदा के तटवर्ती प्रदेश में भी एक उपराजा बहाल किया गया। इस प्रकार, साम्राज्य के विभिन्न भागों पर अपने प्रतिनिधियों को नियुक्त कर पुष्यमित्र ने केंद्रीय नियंत्रण स्थापित किया। वह स्वयं पाटलिपुत्र से शासन करता था।

**विदर्भ से संघर्ष**—पुष्यमित्र के राज्यकाल की एक महत्त्वपूर्ण घटना है विदर्भ के साथ संघर्ष। विदर्भ-राज्य का उत्थान मौर्य-साम्राज्य के अवशेषों पर हुआ था। अंतिम मौर्यशासक बृहद्रथ के समय में मगध दरबार में दो गुट शक्तिशाली थे—मंत्री या अमात्यवर्ग और सेनापतिवर्ग। यज्ञसेन मंत्रिगुट के समर्थन से विदर्भ का शासक बन बैठा। बाद में बृहद्रथ की हत्या के पश्चात उसने अपने-आपको स्वतंत्र शासक घोषित कर दिया। सेनापति (पुष्यमित्र) और यज्ञसेन में शत्रुता ठन गई। **मालविकाग्निमित्रम्** से पुष्यमित्र और यज्ञसेन के बीच हुए संघर्ष का विवरण प्राप्त होता है। कहा जाता है कि यज्ञसेन का चचेरा भाई माधवसेन पुष्यमित्र के पुत्र अग्निमित्र का मित्र था। जब माधवसेन अग्निमित्र से मिलने विदिशा की तरफ जा रहा था, तब यज्ञसेन के एक सैनिक ने उसे गिरफ्तार कर लिया। अग्निमित्र इस घटना से कुपित हो उठा। उसने माधवसेन को रिहा करने की माँग की; परंतु इसके बदले में यज्ञसेन ने शुंगों की कैद में पड़े अपने साले को छोड़ने की माँग रखी। अग्निमित्र ने इसके उत्तर में वीरसेन को विदर्भ पर आक्रमण करने का आदेश दिया। युद्ध में यज्ञसेन की पराजय हुई। माधवसेन को रिहा कर दिया गया। विदर्भ का राज्य माधवसेन और यज्ञसेन में विभक्त हो गया। दोनों राज्यों की सीमा वरदा (वरधा) नदी निश्चित की गई। दोनों शासकों ने पुष्यमित्र को अपना अधिपति स्वीकार कर लिया। इससे पुष्यमित्र की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।

1. B. P. ...

**यवनों का आक्रमण**—पुष्यमित्र के समय की दूसरी महत्त्वपूर्ण घटना है भारत पर यवनों का आक्रमण एवं पुष्यमित्र शुंग का उनके साथ युद्ध। उत्तर-मौर्यकाल में भारत की उत्तर-पश्चिमी सीमा से बढ़ते हुए साकेत (अवध, उत्तरप्रदेश), मध्यमिका (चित्तौड़, राजस्थान) और सिंधु तक यवनों ने आक्रमण किए। पुष्यमित्र ने यवनों को पीछे ढकेल दिया था, परंतु यवन शांत नहीं बैठे थे। **गार्गीसंहिता** के **युगपुराण** से पता चलता है कि यवनों ने साकेत, पांचाल और मथुरा (उत्तरप्रदेश) पर विजय हासिल कर ली। पतंजलि के **महाभाष्य** और कालिदास के **मालविकाग्निमित्रम्** में भी यवन आक्रमण का उल्लेख हुआ है। पांचाल और मित्र-शासकों के सिक्कों तथा यूनानी इतिहासकार स्ट्रैबो के विवरण से भी यूनानी आक्रमण की पुष्टि होती है। कालिदास के अनुसार, जब वसुमित्र (पुष्यमित्र का पौत्र और अग्निमित्र का पुत्र) अश्वमेध यज्ञ के घोड़े की रक्षा के लिए घूम रहा था, तभी सिंधु नदी के किनारे[1] यवनों ने उसे पकड़ लिया। फलतः, युद्ध अनिवार्य हो गया। वसुमित्र ने यवनों को परास्त कर यज्ञ का अश्व वापस लिया। यवन आक्रमण संभवतः डेमेट्रिओस के नेतृत्व में हुआ था, यद्यपि कुछ विद्वान मानते हैं कि यवनों का नेता मिनांडर या मिलिन्द था। यह पुष्यमित्र की यवनों से दूसरी मुठभेड़ थी। अधिक संभावना है कि दमित्र प्रथम ने ही पुष्यमित्र के समय में दोनों बार भारत पर आक्रमण किया। इस विजय के उपलक्ष्य में शुंग शासक ने अश्वमेध यज्ञ किया। जो भी हो, शुंगों ने यवनों को मगध तक बढ़ने से सफलतापूर्वक रोक दिया।

**साम्राज्य-विस्तार**—बरार एवं यवनों पर विजय प्राप्त करने के अतिरिक्त पुष्यमित्र ने भारत के पश्चिमी भाग पर भी विजय प्राप्त की। **दिव्यावदान** और लामा तारानाथ के विवरण से प्रतीत होता है कि पुष्यमित्र ने पंजाब में जालंधर और स्यालकोट पर भी विजय प्राप्त की। ये दोनों नगर [जालंधर और साकल (स्यालकोट)] उसके साम्राज्य के अंतर्गत थे। वी० ए० स्मिथ का विचार था कि पुष्यमित्र को कलिंग के शासक खारवेल का भी सामना करना पड़ा था, जिसने मगध पर आक्रमण किया था; परंतु आधुनिक विद्वान इस मत को स्वीकार नहीं करते। प्रो० एच० सी० रायचौधरी के अनुसार किसी भी हालत में खारवेल पुष्यमित्र का समकालीन नहीं हो सकता। खारवेल की तिथि प्रथम शताब्दी ई० पू० मानी गई है। साथ ही खारवेल के अभिलेख में उल्लिखित मगधराज बहसतिमित्र पुष्यमित्र से भिन्न था। रैप्सन महोदय की धारणा थी कि पुष्यमित्र के समय में आंध्रों ने उज्जयिनी पर अधिकार कर लिया, परंतु यह धारणा निराधार सिद्ध हो चुकी है। मेरुतुंग के विवरण से भी स्पष्ट होता है कि पुष्यमित्र का आवंति (उज्जयिनी) पर अधिकार था।

अपने 36 वर्षों के शासन की अवधि में पुष्यमित्र ने बिखरते मौर्य-साम्राज्य को संगठित कर शुंग-साम्राज्य का रूप दे दिया। उसका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य था विदेशी आक्रमणकारियों पर अंकुश लगाना। उसने अपने साम्राज्य की सीमा दक्षिण में नर्मदा नदी तक बढ़ा ली तथा पंजाब के महत्त्वपूर्ण भागों पर अधिकार कायम कर लिया। मगध के निकटवर्ती क्षेत्रों, बिहार, उत्तरप्रदेश और मध्यप्रदेश तक उसका राज्य विस्तृत था। मगध, कोशल, शाकल उसके अधीन थे। मालवा और बरार भी पुष्यमित्र के नियंत्रण में थे। इस विस्तृत राज्य पर सफलतापूर्वक नियंत्रण रखने के लिए ही दूसरी राजधानी विदिशा में स्थापित की गई। अनेक विद्वान इस तर्क को स्वीकार नहीं करते हैं कि विदिशा पुष्यमित्र शुंग की राजधानी थी। इसका कारण यह है कि अगर विदिशा राजधानी रही होती तो पुष्यमित्र अग्निमित्र को विदिशा में पत्र लिखकर वसुमित्र द्वारा यवनों पर विजय की सूचना नहीं देता। अतः अधिक संभावना यही प्रतीत होती है कि राजधानी पाटलिपुत्र में ही रही। विदिशा एक प्रमुख नगरी थी जहाँ अग्निमित्र उपराजा अथवा प्रांतीय गवर्नर के रूप में रहता था।

**प्रशासनिक व्यवस्था**—पुष्यमित्र शुंग सिर्फ एक विजेता ही नहीं था। साम्राज्य की स्थापना के साथ-साथ उसने प्रशासनिक संगठन पर भी ध्यान दिया। **वायुपुराण** के अनुसार पुष्यमित्र ने अपना समस्त राज्य अपने आठ पुत्रों में विभक्त कर दिया, जो राज्य के विभिन्न भागों पर

---

1. **मालविकाग्निमित्रम्** में वर्णित सिंधु नदी की पहचान निश्चित नहीं है। इसे 'काली सिंधु', 'पंजाब की सिंधु' या 'दोआब की सिंधु' माना जाता है; परंतु संभवतः यह सिंधु नदी पंजाब की ही सिंधु थी; क्योंकि यह विदिशा से काफी दूर थी।

सम्राट के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते थे। राज्य की दो राजधानियाँ थीं; परंतु राजा स्वयं पाटलिपुत्र से ही पूरे साम्राज्य पर नियंत्रण रखता था। ऐसी धारणा पूर्ण तथ्यों पर आधारित नहीं है। यद्यपि शुंगकालीन प्रशासनिक व्यवस्था के विषय में यथेष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है, तथापि पतंजलि एवं कालिदास की रचनाओं से प्रशासन के एक महत्त्वपूर्ण संयंत्र-परिषद या मंत्रिपरिषद के विषय में जानकारी मिलती है। राजा के अतिरिक्त युवराज की भी परिषद थी, जो आवश्यक विषयों पर मंत्रणा देती थी। कालिदास ने 'विदिशा' में युवराज अग्निमित्र एवं पतंजलि ने पुष्यमित्र की परिषद का उल्लेख किया है। ऐसा प्रतीत होता है कि पुष्यमित्र ने मोटे तौर पर मौर्य प्रशासनिक संरचना को ही बनाए रखा। सेना के गठन पर विशेष ध्यान दिया गया होगा; क्योंकि हिंद-यूनानियों का दबाव पश्चिमोत्तर सीमा पर बढ़ता जा रहा था। संभवतः पुष्यमित्र ने राजकुल के सदस्यों को ही प्रांतीय प्रशासक के पद दिए। विदिशा में अग्निमित्र को गवर्नर बनाया गया। अयोध्या का प्रशासक धनदेव भी पुष्यमित्र के वंश का होने का दावा करता है। राजकुमारों को गवर्नरों के अतिरिक्त सेनापति का पद भी दिया जाता था। वसुमित्र को अश्वमेध यज्ञ के घोड़े के साथ भेजा गया था। के० पी० जायसवाल की यह मान्यता उचित नहीं है कि शुंग राज्य एक संघ राज्य था जिसमें पुष्यमित्र के आठ पुत्र एक ही साथ राज्य के विभिन्न भागों में शासन करते थे। इतना निश्चित है कि शासक बनने के बाद भी पुष्यमित्र ने कोई विशिष्ट राजपदवी धारण नहीं की। उसकी उपाधि सेनानी या सेनापति ही बनी रही।

**धार्मिक नीति**—धार्मिक दृष्टिकोण से भी पुष्यमित्र का शासनकाल महत्त्वपूर्ण था। उसके समय में ब्राह्मणधर्म का पुनरुत्थान हुआ। अब बौद्धधर्म की अपेक्षा वैदिक धर्म का महत्त्व ज्यादा बढ़ गया। पुष्यमित्र ने पुनः वैदिक धर्म की श्रेष्ठता स्थापित करने का प्रयास किया। पूजा, यज्ञ एवं बलि की प्रथा, जिसे अशोक ने बंद करवा दिया था, पुनर्जीवित हो उठी। स्वयं पुष्यमित्र ने बरार-युद्ध (विदर्भ) एवं यवनों पर विजय के उपलक्ष्य में अश्वमेध यज्ञ करवाए। यह संभावना भी व्यक्त की गई है कि पुष्यमित्र ने पहला अश्वमेध यज्ञ मगध का शासक बनने के बाद और दूसरा यवनों पर विजय के उपलक्ष्य में किया। अश्वमेध यज्ञ कराने का पहला अभिलेखीय प्रमाण धनदेव के अयोध्या अभिलेख से ही मिलता है। एक यज्ञ के दौरान पतंजलि ने पुरोहित का काम किया। एच० सी० रायचौधरी के शब्दों में, "ये यज्ञ उस ब्राह्मण-प्रतिक्रियावाद की प्रारंभिक कड़ी थे, जो 500 वर्ष पश्चात समुद्रगुप्त और उसके उत्तराधिकारियों के समय पूर्ण रूप से विकसित हुआ था।"[1]

जहाँ पुष्यमित्र शुंग एक तरफ वैदिक या ब्राह्मणधर्म के संरक्षक एवं इसके उद्धारक के रूप में विख्यात है, वहीं वह 'बौद्धधर्म के उत्पीड़क' के रूप में भी कुख्यात है। बौद्धग्रंथों में उसे बौद्धधर्म का कट्टर विरोधी एवं संहारक बताया गया है। **दिव्यावदान** के अनुसार, उसने बौद्ध विहारों को नष्ट करवाया और भिक्षुओं की हत्याएँ करवाई। कहा जाता है कि पुष्यमित्र ने यह घोषणा करवाई थी कि प्रत्येक बौद्ध के सिर के बदले में वह 100 स्वर्णमुद्राएँ देगा। साकल का प्रसिद्ध बौद्ध विहार उसकी आज्ञा से नष्ट कर दिया गया। तारानाथ भी पुष्यमित्र द्वारा बौद्धों पर किए गए अत्याचारों का वर्णन करता है। ये वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण हैं। स्वयं बौद्धग्रंथ यह स्वीकार करते हैं कि "उसका धर्मविरोध किसी धार्मिक भावना के कारण नहीं, वरन् व्यक्तिगत ऐश्वर्य के निमित्त ही अधिक था"। उदाहरणस्वरूप, बौद्ध-मंत्रियों को नौकरी से अलग नहीं किया गया। **महावंश** से ज्ञात होता है कि शुंगकाल में अनेक बौद्ध विहार अच्छी अवस्था में थे, जिनमें हजारों भिक्षु निवास करते थे। इतना ही नहीं, भरहुत के प्रसिद्ध स्तूप का निर्माण एवं साँची, बोधगया स्तूप की वेदिकाएँ भी शुंगकाल में ही बनीं। यह संभावना है कि भरहुत और सांची स्तूप का निर्माण पुष्यमित्र के बाद हुआ हो। अतः, शुंगों पर धार्मिक कट्टरपन का आरोप लगाना उचित नहीं है। उत्तर-पश्चिमी सीमावर्ती क्षेत्र में बौद्धों पर जो भी अत्याचार हुए, वे इसलिए कि बौद्धभिक्षु राजनीतिक षड्यंत्रों में भाग ले रहे थे एवं यूनानियों की सहायता कर रहे थे। राज्य की सुरक्षा के लिए उनकी गतिविधियों पर नियंत्रण आवश्यक था। मगध या मध्यभारत में बौद्धों पर अत्याचार के प्रमाण नहीं मिलते।

---

1. "Th [illegible]

## 2.3. पुष्यमित्र के उत्तराधिकारी *(The Successors of Pushyamitra)*

151 ई० पू० में पुष्यमित्र शुंग की मृत्यु के साथ ही शुंगों के गौरवपूर्ण दिन समाप्त हो गए। पुष्यमित्र की मृत्यु के सौ वर्षों के अंदर ही शुंगों की भी सत्ता समाप्त हो गई। इस संबंध में उल्लेख किया जा सकता है कि प्राप्त मुद्रा साक्ष्यों के आधार पर अनेक विद्वान मानते हैं कि पुष्यमित्र की मृत्यु के साथ ही शुंगों का राजनीतिक महत्त्व कमजोर हो गया। मथुरा, पांचाल, अयोध्या एवं निकटवर्ती स्थानों से 'मित्र' और 'दत्त' के नामवाले अनेक सिक्के प्राप्त हुए हैं। कुछ विद्वान इन मित्र और दत्त नामधारी शासकों को शुंग वंश से संबद्ध मानते हैं, लेकिन अधिकांश विद्वानों का मानना है कि ये सिक्के स्वतंत्र राजाओं के हैं। इनके आधार पर यह आम धारणा है कि पांचाल, अयोध्या, कौशांबी और मथुरा पर से शुंगों का प्रभाव समाप्त हो चुका था। मगध पर भी पांचालों का प्रभाव स्थापित हो चुका था। इसी प्रकार यौधेय, अर्जुनायन, औदुम्बरों और कुनिंदों ने भी स्वतंत्र सत्ता स्थापित कर ली। शुंग सत्ता विदिशा के इर्द-गिर्द सिमट कर रह गई, पाटलिपुत्र अपना राजनीतिक महत्त्व खो चुका था। पुष्यमित्र का उत्तराधिकारी अग्निमित्र हुआ, जो विदिशा में उपराजा की हैसियत से शासन कर रहा था। **मालविकाग्निमित्रम्** का नायक अग्निमित्र ही है। उसने संभवतः पंजाब के यूनानी शासकों से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किया। अग्निमित्र का अधिकांश समय भोगविलास में व्यतीत होता था। इसलिए आठ वर्षों के शासन के बाद ही 143 ई० पू० में उसकी मृत्यु हो गई। उसका उत्तराधिकारी ज्येष्ठ (जेठमित्र) था। वह संभवतः अग्निमित्र का छोटा भाई था। उसने सात वर्षों तक शासन किया। उसका शासनकाल महत्त्वहीन था। इस समय की किसी प्रमुख घटना की जानकारी नहीं मिलती। वसुमित्र इस वंश का तीसरा राजा था। उसने यूनानियों को राजा बनने के पूर्व ही परास्त किया था। उसने 136-126 ई० पू० के मध्य राज्य किया। **हर्षचरित** के अनुसार मृतदेव (मूलदेव) ने एक नाटक के प्रदर्शन के दौरान उसकी हत्या कर दी। मूलदेव ने संभवतः अयोध्या में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। उसके कुछ सिक्के भी अयोध्या से मिले हैं। **भागवतपुराण** के अनुसार वसुमित्र का उत्तराधिकारी भद्रक (ओद्रोक, आन्ध्रक, अन्तक) था। इस शासक की पहचान कुछ विद्वानों ने पभोसा अभिलेख के शासक उदाक तथा बेसनगर के गरुड़ स्तंभ में उल्लिखित काशीपुत्र भागभद्र से की है जो संदिग्ध है। भद्रक के तीन उत्तराधिकारियों के विषय में निश्चित जानकारी उपलब्ध नहीं है।

पुष्यमित्र के पश्चात शुंग वंश का सबसे महत्त्वपूर्ण राजा (नवाँ) भागवत था। उसने करीब 32 वर्षों तक शासन किया। उसके राजत्वकाल की सबसे प्रमुख घटना है तक्षशिला के यूनानी शासक एण्टियलकिड्स के राजदूत हेलिओडोरस का शुंग-दरबार में आगमन। यूनानी होते हुए भी उसने बेसनगर (विदिशा) में गरुड़ध्वज की स्थापना करवाई। इस पर खुदे अभिलेख में शुंगशासक 'काशीपुत्र भागभद्र' का उल्लेख किया गया है, जो प्रो० भण्डारकार के अनुसार भागवत ही था। भागवत शुंगवंश का अंतिम शक्तिशाली राजा था। अंतिम शुंग-शासक देवभूति या देवभूमि एक तरुण तथा अत्याचारी शासक था। पुराणों से विदित होता है कि दस वर्षों के शासन के पश्चात उसके अमात्य वसुदेव ने लगभग 75 ई० पू० में उसकी हत्या कर राज्य पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार, शुंगों का शासन भी शीघ्र ही समाप्त हो गया। मगध पर कण्वों का आधिपत्य हो गया, यद्यपि शुंग मध्यभारत में आन्ध्र-सातवाहनों के उदय तक अपना अस्तित्व बनाए रख सके।[1]

## 2.4. शुंग-राज्य का महत्त्व *(Importance of the Sunga Rule)*

प्राचीन भारतीय इतिहास, धर्म और कला के क्षेत्र में शुंग-शासन का एक विशिष्ट स्थान है। शुंगों ने मौर्य-साम्राज्य के विघटन के पश्चात पुनः राजनीतिक एकीकरण एवं स्थायित्व कायम

---

1. पुराणों के अनुसार शुंग वंश में दस राजा हुए। इनके नाम और राज्य करने की अवधि निम्नलिखित हैं— पुष्यमित्र (36 या 60 वर्ष), अग्निमित्र (8), सुज्येष्ठ (7), वसुमित्र (10), ओद्रक (आन्ध्रक—2 या 7), पुलिंदक (3), घोष (3), वज्रमित्र (9 या 7), भाग (भागतव—32) और देवभूति (10)। पुराणों के अनुसार शुंगों ने 112 वर्षों तक शासन किया (187 ई० पू० से 75 ई० पू०) लेकिन विभिन्न राजाओं के शासनकाल की अवधि जोड़ने पर 120 वर्ष आती है।

करने का प्रयास किया। पुष्यमित्र शुंग इस प्रयास में कुछ सीमा तक सफल भी हुआ। उसने मौर्य-साम्राज्य के अवशेषों पर एक ऐसे राज्य की स्थापना की, जो उसकी मृत्यु के पश्चात भी आधी शताब्दी से अधिक समय तक अस्तित्व में बना रहा। इतना ही नहीं, यवनों को परास्त कर उसने उन्हें मध्यभारत में अपनी शक्ति का विस्तार करने से रोक दिया। उसके उत्तराधिकारी भी इस कार्य में सफल हुए। फलतः, भारत कुछ समय के लिए विदेशी आक्रांताओं से त्राण पा गया। यूनानियों को सीमावर्ती प्रदेशों से ही संतुष्ट होना पड़ा। यूनानियों और शुंगों ने मैत्री की नीति अपनाकर शांतिपूर्ण वातावरण तैयार किया, जिससे ''साहित्य, कला और धर्म के क्षेत्रों में गुप्तवंशी 'स्वर्ण-काल' के समान पुनरुत्थान की लहर-सी आ गई।''

शुंगों ने वैदिक धर्म को इसकी खोई हुई प्रतिष्ठा पुनः दिलाई। इस धर्म से यूनानी भी प्रभावित हुए। साहित्यिक क्षेत्र में नई एवं महत्त्वपूर्ण रचनाएँ हुईं। **मनुस्मृति** की रचना इसी समय आरंभ हुई, जिसने वैदिक धर्म के अनुरूप समाज में ब्राह्मणों की श्रेष्ठता एवं वर्णव्यवस्था को दृढ़तापूर्वक स्थापित कर दिया। पतंजलि, जो गोनर्द (विदिसा और उज्जैन के मध्य स्थित) के निवासी थे, ने पाणिनि की **अष्टाध्यायी** पर अपनी महत्त्वपूर्ण टीका **महाभाष्य** की रचना की। कला के क्षेत्र में भी शुंगकाल में प्रगति हुई। मौर्यकालीन राज्यकला के स्थान पर शुंगकालीन लोक-कला का विकास हुआ। भरहुत एवं विदिशा शुंगकालीन कला के लिए विशेष रूप से विख्यात हैं। भरहुत का विश्वविख्यात स्तूप शुंगों की ही देन है। साँची और बोधगया के स्तूपों की वेदिकाएँ भी इसी समय बनाई गईं। विदिशा में कला की एक विशिष्ट शैली का विकास हुआ। आलोचकों ने शुंगकालीन कला की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।[1]